१. उड़ चल, हारिल

– सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'

उड़ चल हारिल लिए हाथ में, यही अकेला ओछा तिनका
उषा जाग उठी प्राची में कैसी बाट, भरोसा किनका !
शक्ति रहे तेरे हाथों में, छूट न जाय यह चाह सृजन की
शक्ति रहे तेरे हाथों में, रुक न जाय यह गति जीवन की !

ऊपर-ऊपर-ऊपर-ऊपर, बढ़ा चीर चल दिग्मंडल
अनथक पंखों की चोटों से, नभ में एक मचा दे हलचल !
तिनका तेरे हाथों में है, अमर एक रचना का साधन
तिनका तेरे पंजे में है, विधना के प्राणों का स्पंदन !

काँप न, यद्यपि दसों दिशा में, तुझे शून्य नभ घेर रहा है
रुक न यद्यपि उपहास जगत का, तुझको पथ से हेर रहा है !
तू मिट्टी था, किंतु आज मिट्टी को तूने बाँध लिया है
तू था सृष्टि किंतु स्रष्टा का, गुर तूने पहचान लिया है !

मिट्टी निश्चय है यथार्थ, पर क्या जीवन केवल मिट्टी है ?
तू मिट्टी, पर मिट्टी, से उठने की इच्छा किसने दी है ?
आज उसी ऊर्ध्वंग ज्वाल का, तू है दुर्निवार हरकारा
दृढ़ ध्वज दंड बना यह तिनका, सूने पथ का एक सहारा !

मिट्टी से जो छीन लिया है, वह तज देना धर्म नहीं है
जीवन साधन की अवहेला, कर्मवीर का कर्म नहीं है !
तिनका पथ की धूल स्वयं तू, है अनंत की पावन धूली
किंतु आज तूने नभ पथ में, क्षण में बद्ध अमरता छू ली !

उषा जाग उठी प्राची में, आवाहन यह नूतन दिन का
उड़ चल हारिल लिए हाथ में, एक अकेला पावन तिनका !

('इत्यलम्' कविता संग्रह से)

—— ० ——

परिचय

जन्म : १९११, देवरिया (उ.प्र.)
मृत्यु : १९७८, दिल्ली
परिचय : सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' जी आधुनिक हिंदी साहित्य के जाज्वल्यमान नक्षत्र और बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं । आपने कविता, कहानी, उपन्यास, आलोचना, निबंध, संस्मरण, नाटक सभी विधाओं में सफलतापूर्वक अपनी कलम चलाई है । आपने अनेक जापानी हाइकु कविताओं को अनूदित भी किया है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'हरी घास पर क्षण भर', 'आँगन के पार द्वार', 'सागर मुद्रा' (कविता संग्रह), 'शेखरः एक जीवनी'(दो भागों में), 'नदी के द्वीप' (उपन्यास), 'एक बूँद सहसा उछली', 'अरे ! यायावर रहेगा याद' (यात्रा वृत्तांत), 'सबरंग', त्रिशंकु' (निबंध संग्रह), 'तार सप्तक', 'दूसरा सप्तक' और 'तीसरा सप्तक' (संपादन) आदि ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत कविता में 'अज्ञेय' जी ने हारिल पक्षी के माध्यम से देश के नवयुवकों को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है । कवि का कहना है कि जीवन पथ में अनेक कठिनाइयाँ आएँगी किंतु उनसे घबराना नहीं है । जीवन-जगत के आह्‌वान को स्वीकार करके 'फीनिक्स' पक्षी की भाँति आसमान की ऊँचाइयों तक पहुँचना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए ।

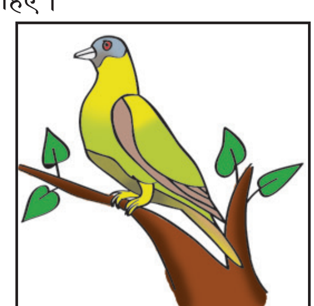

शब्द संसार

हारिल पुं.सं.(दे.) = हरियाल (एक पक्षी) (महाराष्ट्र का राज्यपक्षी)

ओछा वि.(दे.) = तुच्छ, छोटा

दिग्मंडल पुं.सं.(सं) = दिशाओं का समूह

विधना पुं.(सं.) = होनहार

उपहास पुं.सं.(सं.) = हँसी, दिल्लगी

गुर पुं.सं.(दे.) = कार्य साधने की युक्ति, कायदा

ऊर्ध्वंग पुं.सं.(सं.) = शरीर के ऊपर का भाग

दुर्निवार वि.(सं.) = जिसका निवारण करना कठिन हो ।

हरकारा पुं. सं. (फा.) = डाकिया, संदेशवाहक

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

तिनके की विशेषताएँ

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

हारिल की शक्ति संबंधी कवि की अपेक्षाएँ

१.------- २.-------

(३) उचित जोड़ियाँ ढूँढ़कर लिखिए :

अ	आ
१. प्राण	-------
२. -------	पंख
३. उषा	-------
४. -------	पावन धूली

(४) चार ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों :

प्राची : ____________

उपहास : ____________

अमरता : ____________

हलचल : ____________

(५) पद्य में प्रयुक्त प्रेरणादायी पंक्तियाँ लिखिए ।

(६) कविता की अंतिम दो पंक्तियों का अर्थ लिखिए ।

(७) निम्न मुद्दों के आधार पर पद्य विश्लेषण कीजिए :

१. रचनाकार का नाम
२. रचना का प्रकार
३. पसंदीदा पंक्ति
४. पसंद होने का कारण
५. रचना से प्राप्त प्रेरणा

उपयोजित लेखन

'यदि मैं बादल होता.....' विषय पर लगभग सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

75YKIB